सत्संग

सत्संग में ही जीवन का सार है।
सत्संग से ही सत्य की प्राप्ति होती है।।

हर वक्त दुनिया की बातें सुनते-सुनते आदमी का दिमाग बहुत कुछ चिड़चिड़ा हो जाता है। कुछ बातें इसी ढंग से कही जाती हैं जिनका असर दिल और दिमाग पर अच्छा नहीं पड़ता। उन सुनी हुयी बातों को कुछ दबाने के लिये या कुछ उनमें परिवर्त्तन लाने के लिये मनुष्य, सब तो नहीं लेकिन कुछ लोग समय निकालते हैं मानसिक शान्ति के लिये।

मानसिक शान्ति के भिन्न-भिन्न तरीके हैं। कुछ समाज बने हुये हैं, जिन समाजों में रविवार के दिन कुछ धार्मिक चर्चा हुआ करती है। लोग आते हैं, बैठते हैं, गाते हैं, सुनते हैं, सुनाते हैं और घर चले जाते हैं। कुछ समय के लिये शायद उन्हें शान्ति मिलती होगी किन्तु चिरस्थायी शान्ति के लिये मनुष्य को क्या करना पड़ता है इसकी ओर ध्यान बहुत कम लोगों का है। जिन्हें अपने जीवन को सुन्दर बनाना है, शान्त बनाना है, दुनिया में रहकर अपने को कुछ अलग ही बनाना है ऐसे लोगों के लिये प्रभु अवसर देता है। चाहे वह मन्दिर हो चाहे वह मस्जिद हो किन्तु कुछ समय के लिये वहाँ बैठकर व्यक्ति मानसिक शान्ति के लिये उपासना करता है और वैसा ही कुछ आप लोगों के साथ है। आप लोग सत्संग सदन जाते हैं। वहाँ भी कुछ बातें सुनते हैं। यहाँ आते हैं यहाँ भी कुछ बातें सुनते हैं। इन बातों का असर आप लोगों के दिल पर क्या होता है यह तो आप ही समझ सकते हैं किन्तु जहाँ तक अपना

सम्बन्ध है वहाँ कुछ सोचना पड़ता है। सोचना यह है कि यह जो इतनी बातें कही जाती हैं आखिर ये कहाँ चली जाती हैं।

एक नदी है उसमें हम वे फूल भी डालते हैं जो प्रभु के चरणार्विन्द में समर्पित किये गये थे और उसमें कूड़ा भी फेंका जाता है। अब हमें यह देखना होगा कि इस बहती हुयी दुनिया में हम फूल फेंकते हैं या कूड़ा? दोनों में ही सफाई है। यदि दिल का कूड़ा हम फेंक सके, यदि दिल के क्रोध को, दिल की ईर्ष्या को, द्वेष को, निरर्थक भावनाओं को हम फेंक सके उससे भी हमारा मन शान्त हो सकता है और यदि प्रभु के चरणार्विन्द में चढ़ाये हुये फूलों को विसर्जित करते हैं तो उस विसर्जन में भी हमारा यह उत्तम भाव कि ये फूल भगवान के समर्पित किये गये कहीं ऐसा न हो कि लोग इन्हें पैरों से कुचल कर रौंद दे, हमें शान्ति देता है। उत्तम कार्य में यदि किसी वस्तु (पूजा की सामग्री) का प्रयोग किया गया है तो उसका अन्त भी उसी रूप में होना चाहिये। तो यह तो मनुष्य की भावना पर है कि वह क्यों चढ़ाता है, क्या चढ़ाता है किस पर चढ़ाता है और चढ़ाने का उसके दिल पर क्या असर होता है?

नाम लेनेवाला नाम लेता है। नाम लेने के पश्चात् भी यदि उनको मानसिक शान्ति नहीं मिलती तो उसे समझना होगा कि वह कहाँ से नाम लेता है कि उसे शान्ति नहीं मिलती? लोग आते हैं, अपनी बातें कहते हैं, समझते हैं और अपने दिल की बातों को कहकर जरा शान्ति भी लेते हैं। उनका कहना है कि जब हम भाव की बातें सुनते हैं तो हमें बहुत अच्छी लगती है लेकिन हमारी वह स्थिति सदा बनी क्यों नहीं रहती? हम उन भावों में विचरण क्यों नहीं कर पाते जिन भावों में विचरण करने से मनुष्य को

मानसिक शान्ति मिलती है? बात यह है एक ओर दुनिया का खिंचाव है और एक ओर प्रभु की शरणागति का। चूँकि जो चीज गन्दी होती है उसकी दुर्गन्ध मनुष्य के पास बहुत जल्दी पहुँच जाती है और दूसरी ओर जो मधुर सुगन्ध फैलानेवाली वस्तु होती है उसकी सुगन्ध का पता बहुत कम आदमियों को लगता है।

हम नाम लेते हैं और हमको मानसिक शान्ति नहीं मिलती तो कहीं कुछ ऐसी बात है जहाँ कुछ कमी रह गई है। भजन गानेवाला गाते समय लय की तरफ देखता है, शब्द की तरफ देखता है, संगीत की तरफ देखता है, जो सुन रहे हैं उनकी तरफ देखता है तो फिर उसका भजन कहाँ? भजन में तो तल्लीनता आती है। नाम में मनुष्य के हृदय की कली खिलती है किन्तु अगर ऐसी अवस्था मनुष्य की नहीं बनती तब तो वह केवल एक कर्म-ही-कर्म रह गया। वह केवल एक वाणी का उपयोग मात्र ही रह गया क्योंकि मनुष्य को शान्ति नहीं मिली।

यह जो आप लोगों का आना है, कभी-कभी मैं सोचा करता हूँ कि यह क्या उद्देश्य रखता है। बोलनेवाला अपनी बातें सुननेवाले के सम्मुख रखता है किन्तु बहुत-सी ऐसी बातें होती हैं जिनको सुनाना उचित भी नहीं। यदि मेरे दिल में अपने इष्ट के प्रति प्रेम का भाव है तो मैं किसी के सम्मुख क्यों रखता हूँ। मेरे रखने का क्या उद्देश्य है? मैं यह चाहता हूँ कि सुननेवाले के हृदय में भी वैसा ही भाव पैदा हो जाये जैसा कि उस समय बोला जाता है किन्तु फिर देखा जाता है कि कुछ समय के पश्चात् मनुष्य में वही दुनियादारी का व्यवहार, वही चिन्ता, वही घृणा, वही दुःख, वही अशान्ति रहती है। क्या

किया जाये। क्या उपाय किया जाये, कौन-सा रास्ता अख्तियार किया जाय जिससे कि हम शान्त होकर के रह सकें।

एक व्यक्ति ने साबुन तो लगाई शरीर के ऊपर लेकिन उस साबुन को अपने शरीर पर अच्छी तरह मला नहीं। मल भी लिया तो अच्छी तरह से जल से धोया नहीं और धोने के पश्चात् भी अच्छी तरह से वस्त्र से पोंछा नहीं तो उसमें चमक नहीं आती। जब एक शरीर को साफ करने के लिये आदमी को जल चाहिये, साबुन चाहिये, मलने का तरीका चाहिये तो फिर आपका मन यूँ ही क्यों? कभी किसी समय शान्त होकर के सोचें कि हम तन को शुद्ध करने के लिये, तन को हल्का-फुल्का करने के लिये इतने प्रयोग करते हैं किन्तु क्या हम इसी अपने मन को शान्त करने के लिये भी उसी प्रकार का कुछ काम करते हैं? सुन्दर बातें सुनना, उनके अनुकूल अपने जीवन को उसी प्रकार चलाना, शान्ति से बैठना, मधुर शब्दों से दूसरे व्यक्ति से वार्तालाप करना, धीरे-धीरे प्रभात में अपने मन की बातों को अपने प्रभु के सम्मुख कहना, आनन्दित होना, दर्शन करके अपने भीतर प्रसन्नता महसूस करना यदि ये सब चीजें नहीं होती हैं तो उससे कुछ लाभ नहीं उठा पायेंगे। हम तो चाहते हैं कि आपका जीवन इतना हल्का इतना आनन्दमय, इतना प्रसन्न हो कि दुनिया देख करके कहे कि हाँ भई, सत्संग है। सत्य है सत्य के चिह्न भी हैं किन्तु जब तक आप सुनी हुयी बातों का आनन्द नहीं ले पाते तब तक वे केवल शब्द, केवल बातें ही रह जाती हैं।

प्रत्येक व्यक्ति आया है सुख की साँस लेने के लिये। आनन्द तो बहुत ऊँची अवस्था का नाम है। आनन्द के अधिकारी तो वे ही हैं जिनका चित्त सत्य पर ठहरा हुआ है और जहाँ चित्त सत्य पर ठहरा कि आनन्द अपने

आप होगा। कल्पना नहीं यथार्थ में मनुष्य का जन्म बहुत बड़ा अर्थ रखता है। जिन्हें हम महापुरुष कहते हैं उन्होंने भी हमारी ही तरह शरीर धारण किया है किन्तु जहाँ हमारे हृदय में चिन्ता, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या आदि का भाव है वहाँ उनके हृदय में प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, आनन्द, उमंग न जाने किन-किन चीजों से उनका हृदय विभूषित रहता है।

हृदय क्या है? एक कैमरे के फिल्म की तरह है; जब देखता है अपने इष्ट को तो सम्पूर्ण भाव (इष्ट) ऐसे छा जाता है कि उसके अलावा उसके लिये दुनिया में देखने के लिये और कुछ भी नहीं रहता। देखता है और खिल जाता है। सूर्य की किरणें जब सूर्यमुखी फूल पर पड़ती हैं तो वह सूर्य जो ९ करोड़ २० लाख मील की दूरी पर है (जैसा कि विज्ञान वालों का कहना है) उसकी एक किरण अनेक सूर्यमुखी फूलों को खिला देती है। भजन गाकर अगर हमारे हृदय में तृप्ति का भाव नहीं आया, अच्छी बातें सुनकर यदि हम अपने दु:ख, चिन्ता, घृणा, ईर्ष्या को न भूल पाये तो उन बातों से क्या लाभ हुआ।

बीज डाला जाता है भूमि पर इस आशा से कि यह बीज पौधे के रूप में होगा। यह बीज फल देनेवाला होगा। इस एक बीज से अनेक बीज होंगे। एक बीज न जाने कितनों के सुख का कारण बनेगा, कितनों की पेट की ज्वाला को शान्त करने में सहायक होगा। क्या हमने कभी यह भी सोचा कि हमारे मुख से निकला हुआ एक राम का नाम जो एक बीज से कहीं ज्यादा शक्ति रखने वाला है, वह नाम न जाने कितनों के सुख का कारण बनेगा? लोगों ने केवल एटम बम के बारे में सुना है। एटम बम फेंकने से गाँव के गाँव खत्म हो जाते हैं, अनेक व्यक्तियों का हवन हो जाता है। यह जो एटम शब्द है इसे हम ठीक से देखें तो मालूम होगा कि ये एटम नहीं ये 'आत्म' है, आत्मा

से सम्बन्ध रखनेवाली भावना है जहाँ वाणी का एक-एक शब्द ऐसा अनोखा काम करता है कि मनुष्य का जीवन ही बदल जाता है। जहाँ गुरु शिष्य का सम्पर्क है, जहाँ प्रिय और प्रिया का भाव है जहाँ इष्ट और भक्त का सम्बन्ध है वहाँ उसका (गुरु) एक शब्द मनुष्य के हृदय में एक ऐसी स्फूरणा, एक ऐसा आनन्द का श्रोत प्रवाहित करता है कि मनुष्य को अपने नीरस जीवन की भी कीमत मालूम होने लगती है।

हमें सब कुछ मिला। हमें चौबीस घण्टे मिले साँस लेने के लिये, जीवित रहने के लिये, संसार के साथ सम्बन्ध रखने के लिये किन्तु हम अपने मन को शान्ति नहीं दे पाये। यह समय का दोष है, या हमारे विचारों का दोष है या हम ऐसे लोगों के पास बैठते हैं जो स्वयम् दुःखित होकर हमें दुःखित करते हैं। जो स्वयम् निन्दा करके हमारे हृदय में भी निन्दा की भावना के लिये जगह बनाते हैं। हम कभी सोचें तो सही कि ये कान भगवान ने हमें क्यों दिये? क्या पर-निन्दा सुनने के लिये? दुनिया की निरर्थक बातों को सुनकर हृदय में निरर्थक स्थान देने के लिये? कान दिये गये हैं कान्ह की बात सुनने के लिये। उस कान्ह की, उस कृष्ण की, उस बाँसुरी बजानेवाले की जिसने अपने युग में केवल प्रेम-भाव, केवल आनन्द-भाव, केवल नाच-नाच कर दुनिया को प्रसन्न करने का भाव दिया। हम कृष्ण के उपासक और हमारा मन, हमारा हृदय बाँसुरी सुनने के लिये छटपटाता नहीं? हम राम के उपासक और हम प्रतिज्ञावद्ध होना भी नहीं चाहते? हम कैसे कृष्ण के भक्त हैं, हम कैसे राम के भक्त हैं? न हम आनन्द से अपना जीवन यापन कर पाते हैं, न हम अपने जीवन को कुछ ऐसी मोड़ ही दे पाते हैं, जिससे हमारा जीवन ही कुछ दूसरा हो जाये – हम कैसे कृष्ण के भक्त हैं।

प्रत्येक रविवार को कुछ बातें कही जाती हैं। लोग आते हैं और सुनकर चले जाते हैं लेकिन वे बातें कहाँ जाती है। बोलने का समय आधा घण्टा का ही क्यों न हो, वह भी बेकार क्यों जाये? हम दस मिनट भी कहीं बैठें, क्यों न हम शान्ति से बैठें। हम पाँच मिनट भी किसी से बातें करते हों तो क्यों न प्रेम की बातें, भाव की बातें, भक्ति की बातें कहें ताकि हमें भी शान्ति मिले और सुननेवालों को भी शान्ति मिले। यदि ऐसा हम नहीं कर पाते तो हमारी यह सत्संग कोई विशेष अर्थ नहीं रखती। हमें तो अपने जीवन को सुन्दर बनाना है। हम सत्संगी हैं। सत्य के साथ हमारा संग है। हमने कोई निरर्थक बातें पकड़ कर अपने दिल को बहलाने के लिये, नाच गाने के लिये अपना समय नहीं दिया है। हमने सत्य की उपलब्धि के लिये अपना समय लगाया है। जो व्यक्ति सत्य के प्रति भाव रखता है, ऐसा व्यक्ति एक दिन सत्य में ही मिल जाता है। उसे यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मुझे इस संसार रूपी समुद्र से पार करो।

सत्य सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है और आपकी भावना जब सत्य की ओर हुयी तो ये दुनिया की बातें आपके लिये अपने आप कोई अर्थ नहीं रखती। जब तक आपका मन सत्य की तरफ नहीं जाता, प्रेम की तरफ नहीं जाता तभी तक आप चिन्तित हैं, दु:खित हैं, संतप्त हैं। मन में अनेक तरह के निरर्थक भाव आप रखते हैं लेकिन जिस दिन आपका थोड़ा भी सम्पर्क सत्य की भावना से हुआ नहीं कि आप देखेंगे कि आपके भीतर नवीनता का प्रकाश क्रमश: फैलता चला जा रहा है।

बार-बार आती हैं बातें और वे कहती हैं कि किनको सुनाता है, क्या असर होगा इन पर? सात दिन तक जो सुख-दु:ख की निन्दा-ईर्ष्या की नदी

में तैरती हैं वे वृत्तियाँ क्या आधा घण्टा ये भाव की बातें सुनकर शान्त हो सकेंगी? जलते हुये तवे की तरह हम अपना दिल लिये बैठे हैं। ये मीठी बातें, ये भावपूर्ण बातें हमें कब शान्ति दे पाती हैं? क्योंकि हमारा हृदय रूपी तवा इतना जलता रहता है कि उस पर शान्ति की ये दो बूँदें जब पड़ती हैं तो वे जल जाती हैं। क्या करें? "कैसे हूँ मैं हरि वश कर पाऊँ, जिय की जरनि मिटाऊँ"। किसी प्रकार मैं प्रभु को अपने हृदय की दो बातें सुना सकूँ, तो मेरे हृदय में चौबीसों घण्टा एक विचार की, दुःख, घृणा, ईर्ष्या की जो अग्नि प्रज्वलित है, वह उस महान प्रभु की कृपा से शान्त हो जाये। मनुष्य थोड़ा-सा पानी डालकर के यह समझ लेता है कि यह तवा ठण्डा हो जायेगा। देखो इस प्रभु की महिमा को, वर्षा करता है, जलती हुयी भूमि के भीतर वह एक ऐसी प्रेरणा देता है कि जहाँ कुछ नहीं था वहाँ भी हरी-भरी घास दिखलाई देती है। प्रभु की कृपा ऐसी ही महान है। हमने अपने दिल को अभी उसके सम्मुख रखा नहीं। केवल बातें सुनकर ही चले जाते हैं। अपना दिल न्यौछावर करके प्रभु के चरणार्विन्द में जाते नहीं, कभी ऐसी अवस्था में हम आते नहीं इसलिये हमें भक्ति का आनन्द भी आता नहीं। यह तो हम खूब देखते हैं कि भाँग पीकर के एक आदमी मतवाला हो जाता है लेकिन यह बहुत कम देखने में आता है कि भजन की भाँग पी करके मनुष्य मस्त हो जाये। उसके मस्तिष्क में दिन-रात इतनी चिन्तायें घूमती रहती हैं कि वह समझ ही नहीं पाता है कि कैसे शान्ति लूँ।

भिन्न-भिन्न जगह का भिन्न-भिन्न रास्ता है। यह जो सत्संग है यह तो सत्य के साथ संग करने के लिये आपको कहती है। रहो दुनिया में। कौन कहता है कि दुनिया को छोड़ करके आपको कहीं जाना है क्योंकि आप कहीं भी जायेंगे तो आपके भावों की दुनिया आपके साथ रहेगी। आपके दुःख सुख

की दुनिया आपके साथ रहेगी। सोचिये और समझिये कि आपको अपने जीवन को निरर्थक कामों में बिताना है या जीवन का रस लेना है? यदि आप जीवन का रस लेना चाहते हैं तो ऐसे भजन गाओ, ऐसी प्रार्थना करो कि आपके दिल में आपके दिमाग में कोई गन्दगी का भाव, कोई दुःख का भाव, कोई चिन्ता का भाव न रहे। रहे केवल आपका श्याम और आप राधा की तरह उसके चरणार्विन्द में लिपट कर अपने दुःखों को भूल जाओ। जब तक ऐसी अवस्था आपकी नहीं होती तब तक कैसे जानेंगे कि दुनिया क्यों भक्ति के पीछे परेशान रहती है। लोग क्यों घरबार छोड़कर भी एकान्त में रहकर के उस सुख की प्राप्ति करना चाहते हैं जिस सुख की प्राप्ति के पश्चात् फिर दुनिया में आने की कोई इच्छा नहीं रहती।

आज मनुष्य छटपटाता है। पुस्तकें पढ़ता है। आँखें बन्द करके ध्यान में लाने की चेष्टा करता है लेकिन उसका हृदय अभी तक कलुषित है, निरर्थक बातों से इतना भरा हुआ है कि वह समझ नहीं पाता कि मैं करूँ तो क्या करूँ? उन बातों को भुलाने के लिये, उन बातों से कुछ आगे बढ़ने के लिये ही यह सत्संग है। जहाँ आपसे यह नहीं कहा जाता कि इसको मानो या उसको न मानो। जहाँ आपसे यह नहीं कहा जाता कि यह पाप है, यह पुण्य। यहाँ ऐसा करो वैसा करो। बस एक ही बात कही जाती है कि जीवन का अन्तिम साँस अपने प्रिय की यादगार में बीते। आपका हृदय कुछ ऐसा हो, कुछ ऐसी प्रेम की अनुभूति हो कि आप अपने आपको भूल कर प्रभुमय हो जायें। आपका जीवन कहीं भी, किसी भी स्थिति में क्यों न रहे आप अपने प्रिय को, अपने इष्ट को न भूलकर केवल दिन-रात उसी के गुणगान, उसी के प्रेम में बितायें यह आशा करता है आपसे सत्संग।

आप उन बातों को भूल जाईये जहाँ छोटी-छोटी बातों के लिये मन दु:खित हो जाता है, क्रोधित हो जाता है। आपको तो उस दुनिया में रहना है जहाँ द्वापर में भगवान कृष्ण ने बाँसुरी बजा करके लोगों के हृदय में एक आनन्द की एक उत्साह की सृष्टि कर दी थी। हम भूल जायें कि हम कलिकाल में है। हम भूल जायें कि हम ऐसे लोगों के साथ में हैं जिन्हें भगवान की भक्ति प्रिय नहीं। न जाने हमारे पूर्व संस्कार ऐसे क्यों बन पड़े कि जब तक प्रभु के प्रेम की हम दो बातें सुन न लें तब तक हमारे मन को शान्ति नहीं। यही तो पूर्व संचित शुभ कर्म हैं।

आप यह न समझें कि हम चले आये केवल सत्संग में। आपके भीतर एक उत्सुकता है, आपके भीतर एक ऐसी चीज है जो रविवार के दिन आपको घर में बैठने नहीं देती। कहती है उठ, चल, तुझे कुछ सुनना है। तुझे अपने दु:ख, अपने कष्ट को भूलना है। तुझे प्रेम की गंगा में नहाना है, भाव में बह जाना है, जीवन को सार्थक बनाना है। तू दुनिया की तरह रोने के लिये नहीं आया। तूने सत्संग का पल्ला पकड़ा है। तेरा जीवन विशेष अर्थ रखता है। तू आँसू बहाने के लिये नहीं आया। तू दुनिया के आँसू पोंछने के लिये आया है। तुझे दुनिया के आँसू पोंछकर उनके हृदय में प्रभु की ज्योति का भाव भरना है। तेरा जीवन एक खिलते हुये फूल की तरह है और उस फूल को तुझे प्रभु के चरणार्विन्द में समर्पित करके जीवन लीला का आखिरी रूप, आखिरी दृश्य बिताना है। बस।।

❋ ❋ ❋